मोरंगे

अगस्त 09

सम्पादन प्रभात

सहयोग भारती, मीनू मिश्रा
कमलेश, दिनेश शुक्ला

डिजाईन शिव कुमार गाँधी

आवरण फोटो–मदन मीणा

प्रबंधन मनीष पांडेय सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र 3/155,
हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान

Email;graminswm@gmail.com
website; graminshiksha.in
ph.no. & fax 07462-233057

इस बार

कविताएँ

बरसात का समय मैं भी साथ चलूँगा पापा
वाह रे ! प्यारे रमेश हलवाई का कमरा

कहानियाँ

शलौक और कमला कौवा कौवी ने खेती की
औरत और शेर मैं क्या खाऊँगा ?

आलेख

आग की खोज तथा पखेरू मेरी याद के
व अन्य स्तम्भ

बलवीर

पखेरू मेरी याद के

हम मिलने गए उसके दो–तीन दिन बाद ही
लीली सब घर वालों से मिलने गाँव आ गई

मैं तब सातवीं में पढ़ता था। बारिश के महीनों के एक दिन की बात है। बड़े काका पहाड़ के जंगल में जाने के लिए रवाना हो रहे थे। उन्होंने हुक्का पी लिया था। खड़े हो गए थे। अँगोछा कंधे पर डाल लिया था। लाठी हाथ में ले ली थी। मैंने कहा–'मैं भी चलूँगा।' काका ने कहा–'दो कोस की दूरी और दो पहाड़ों की चढ़ायी। तू हैरान हो जाएगा।' मैंने कहा–'नहीं होऊँगा।' 'चल तो चल।'–काका ने कहा। मैं उनके साथ हो लिया। रास्ते में चारों तरफ खेत थे। खेतों में मूँगफली और बाजरे की फसलों की हरियाली। खेतों की मेड़ों की बबूल की टहनियों की बाड़ों में बारिश की बेलें जिनमें रंग–बिरंगे फूल और रंग बिरंगे फल लटक रहे थे। ये बेलें बरसाती ककोड़े, तुरई, लौकी, चकरी, सेंध, फूट आदि की थी। बारिश की वनस्पतियों और खेतों की गीली मिट्टी और डबरों–पोखरों में भरे बारिश के कच्चे पानी की गंध वातावरण में फैली थी। हम खेतों के बीच की पतली पगडण्डियों पर चलते जा रहे थे। रास्ते में छोटी ढाणियाँ और छोटे गाँव थे। रास्ते में किसान काका को आवाज देकर बुला लेते–'आ रे भाई खिलारी आ, हुक्कौ पी जा।' मुझे यह बहुत बुरा लगता। क्योंकि काका हुक्का पीने बैठ जाते और बहुत देर–देर तक किसानों से बातें करते रहते। मैं उतनी देर तक ऊबता रहता। बहुत देर बाद जब काका चलने के लिए खड़े होकर पाँव जूते में घुसाते मुझे बहुत अच्छा लगता।

अब हम पहाड़ चढ़ रहे थे। हमारे अगल–बगल में झरने और बरसाती नाले आवाज करते हुए बह रहे थे। इंसान और उनकी बस्तियाँ पीछे छूट चुके थे। यहाँ जंगली पक्षियों की और हवाओं की आवाजें थीं। दोपहर तक हम पहाड़ पर पहुँचे। पहाड़ का

विशाल दृश्य देखकर मुझे रोमांच हो रहा था। मैंने ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था। मैंने हमेशा पहाड़ को दूर से और ऊँचाई में देखा था। मैंने कल्पना नहीं की थी कि ऊपर आने पर वह एक विशाल मैदान की तरह मिलेगा। काका ने बताया कि यह तीन कोस चौड़ा है और बारह कोस लम्बा है। जहाँ तक दिखाई दिया वहाँ तक गायें ही गायें मैंदानों में चर रही थीं। हजारों गायें थीं। असल में इलाके भर के गाँवों के किसान बारिश के महीनों में अपनी गायों को चरने के लिए यहाँ छोड़ जाते थे। हमारी चौबीस गायें भी यहीं कहीं थीं। काका उन्हीं को ढूँढ रहे थे। कोई गाय कहाँ मिली कोई कहाँ। चारों ओर घूम कर हम हमारी सारी गायों और उनके बछड़ों से मिले। कोई गाय कहीं दूर चरती दिख जाती तो काका आवाज लगाते–'आ ! आ ! लीली ! लीली !' हमें देखते ही गाय दौड़ी आती और पास आकर खड़ी हो जाती। काका उसके कान,पीठ और मुँह पर हाथ रखते। वह तब तक खड़ी रहती, जब तक हम खड़े रहते। हम आगे चलते तो वह भी साथ–साथ चलती। शाम को मैं और काका और हमारी सभी गायें एक जगह इकट्ठे हो गए थे। वहाँ कुछ और किसान भी मिले। वे भी अपनी गायों से मिलने आए थे।

अब हम वापस लौटने के लिए रवाना हुए। शाम झुक आयी थी। पहाड़ उतर कर हम खेतों के किनारे घुटनों तक ऊँची घासों में चल रहे थे। अँधेरा गहरा रहा था। काका लाठी से आगे की घासों को हिलाते–डुलाते मुँह से शी–शी ! क्ड़ौ–क्ड़ौ ! की आवाज करते आगे–आगे चल रहे थे। वे ऐसा इसलिए कर रहे थे कि कहीं कोई साँप–कीड़ा वगैहरा हो तो आहट सुनकर भाग जाए। मैं बछड़े की तरह उनके पीछे–पीछे चल रहा था।

इस बात को दो–तीन बीत गए थे। एक शाम हमने देखा कि लीली गाय दौड़ती–हाँफती हुई आयी और बाड़े में आकर खड़ी हो गई। हमने उसे देख लिया। पर उसे शायद हम खाट पर बैठे दिखाई नहीं दिए। उसने रम्भा कर अपने आने की सूचना दी। हम सभी दौड़कर उसके पास आकर खड़े हो गए। काका ने उसे ढकोली में तूड़ा नीरा। पर उसे कोई भूख–वूख नहीं थी उसे तो घर की याद आयी थी इसलिए मिलने चली आयी।

इसके दो–तीन बाद काका उसे वापस पहाड़ पर छोड़ आए। घर के किसी मवेशी को बारिश के चार महीने खत्म होने से पहले घर आने की इजाजत नहीं थी। क्योंकि बारिश के इन चार महीनों की पहाड़ी चरायी से बरस भर उनका शरीर चलता था। वरना मरू–प्रदेश में इतना चारा कहाँ कि बारह महीनों तक मवेशियों को भरपेट खिलाया जा सके।

प्रभात

शलौक और कमला

एक गाँव था। उसमें एक लड़का था। उसका नाम शलौक था। वो लड़का बहुत अच्छा था। शरीफ भी था। तो वो लड़का एक दिन अपने खेत पर गया। उसने खेत में बाजरा बो रखा था। बाजरा में सरे आने लगे और धीरे–धीरे बाजरा पकने लगा।

शलौक ने सोचा कि बाजरा काट लेते हैं। उसने अपनी बहन से कहा कि अपने खेत में जो बाजरा है वो पक गया है तो उसे काटने चलें। शलौक और कमला बाजरा काटने गए। खेत में बाजरा काटते–काटते शाम हो गई। दोनों वापस घर आ गए। खाना बनाकर खा लिया और सो गए। फिर सुबह हुई तो दोनों बाजरा काटने गए। इतनी जोर की बरसात आई कि शलौक और कमला भीगते–भीगते अपने घर आ गए। कपड़े बदल लिए। फिर शाम हो गई तो सो गए। फिर सुबह हो गई। सुबह होते ही बाजरा काटने गए। इतनी भयंकर बाढ़ आई कि शलौक और कमला पानी में बहते–बहते दूर चले गए। एक बहुत बड़ा गढ्ढा था। दोनों गढ्ढे में जाकर गिर पड़े। उस गढ्ढे में पानी भरा तो कमला और शलौक को साँस नहीं मिली। दोनों गढ्ढे में ही मर गए।

अटल मीणा, उम्र 10 वर्ष, समूह झील, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनुपरा, सवाईमाधोपुर

मैं क्या खाऊँगा ?

मैं और किरण खेत पर जा रहे थे। रास्ते में एक खेत में एक महिला और एक आदमी नींद (गुड़ाई) रहे थे। उनमें कुछ बात पर झगड़ा हो रहा था। उनके दूसरे परिवार वाले भी आसपास के खेतों में नींद रहे थे। नींदते–नींदते आदमी और महिला में झगड़ा हुआ। उस आदमी के हाथ में कुदाली थी। उसने कुदाली की ही उस औरत के मार दी। औरत खेत में पसर गई और रोने लगी। फिर गाली निकालते हुए कहने लगी–'आपको क्यों जोर आ रहा है ?' आदमी बोला–'चुप रह नहीं तो एक और कुदाली मारूँगा।' 'तू चुप रह।' औरत ऐसे कहते हुए सूदी खेतों में होकर भागी। उसके लड़के को भी साथ ले गई। उसके पीछे–पीछे आदमी भी भागा कि कहीं कुँए में मर जाएगी। औरत भागी–भागी घर आ गई। फटाक से खाना बनाके खाके सो गई। आदमी घर पर नहीं आया। वह रात में आया। उसने उसे खेत पर कूट लिया था। पर अब उसके कलेश हो गया कि इसने तो खाना भी नहीं बनाया। मैं क्या खाऊँगा ?

बीना मीणा, उम्र 11 वर्ष, समूह सागर

कौवा और कौवी की खेती

एक कौवा और कौवी थे। उनके एक बच्चा था। एक दिन उन्होंने सोचा कि हमें कुछ काम करना चाहिए ताकि पैसे आएँ। पैसों से हम बच्चे को स्कूल भेजेंगे। कौवी बोली–'लेकिन हम करेंगे क्या ?' तो कौवा बोला– हम किसी से पूछेंगे कि हम क्या काम करें ?' हम कोयल बहन से पूछते हैं कि हम क्या काम करें ? कोयल से पूछा तो वह बोली–'तुम लोग खेत का काम कर लो।' यह काम कौवा और कौवी को पसंद आया। फिर वे खेत का काम करने लगे। उन्होंने गेहूँ के बीज बोए। वे खेत में खूब मेहनत करते। एक दिन उन्होंने देखा कि फसल खूब हो गई तो कौवे ने उन्हें तोड़कर तैयार किया और बाजार में बेच आया। उनके खूब पैसे आए। उनका बेटा स्कूल जाने लगा। कौवा और कौवी बहुत खुश थे।

एकबार बारिश नहीं हुई। कौवी बहुत बीमार पड़ गई। खेत में फसल भी नहीं हुई। कौवे ने सोचा कुँआ खोदना होगा। उसने चोंच से कुँआ खोदना शुरू किया। एक महीने में उससे कुँआ खुदा, उसमें पानी निकला। फिर उस कौवे ने अकेले ही खेती की। अनाज हुआ। कौवे ने फसल बेच दी तो पैसे आए। कौवे ने कौवी को अच्छा खाना खिलाया। कौवी कुछ दिन बाद ठीक हो गयी।

अंकित, समूह–रेनबो, उम्र 10 वर्ष

औरत और शेर

एक बार एक शेर एक गाँव में घुस गया। गाँव में उसने एक आदमी पर हमला कर दिया। उसने आदमी को बुरी तरह घायल कर दिया। फिर वह जंगल में भाग गया। घायल आदमी ने कुछ देर बाद दम तोड़ दिया। उस आदमी की पत्नी जोर–जोर से रोने लगी। उसका रोना सुनकर सारा गाँव इकट्ठा हो गया। सभी ने उससे पूछा–'अरी भाई ! क्या हुआ ? रो क्यों रही है ?' उस औरत ने रोते–रोते कहा मेरे पति को शेर ने मार डाला। गाँव के सारे लोग हाथों में लाठियाँ लेकर शेर को ढूँढने के लिए जंगल में गए। शेर उन्हें कहीं नहीं मिला। वे सब थक हार गाँव में लौट आये। गाँव लौटकर वे उस आदमी को शमसान में जला आये।

उस आदमी की पत्नी एक दिन उस शेर को ढूँढने के लिए जंगल में अकेली निकल गयी। जंगल में उसे शेर मिल गया। शेर उसे देखकर जोर से दहाड़ा। दहाड़ को सुनकर वह डर गयी और गाँव में भाग आई। शेर भी उसका पीछा करते हुए आ गया। वह औरत घर के अंदर गई और उसने किवाड़ अंदर से बंद कर लिए। शेर घर के बाहर बाड़े में बैठ गया।

उस औरत ने रात भर किवाड़ नहीं खोले। सुबह उसने किवाड़ के सुराख में झाँककर देखा तो शेर बाड़े में खूँटे के पास बैठा था। उस औरत ने बैलों को बाँधने का जेवड़ा उठाया। उसमें पासा लगाया। धीरे–धीरे किवाड़ खोले। धीरे–धीरे जाकर पासा शेर के गले में डाल दिया और उसे खूँटे से बाँध दिया।

शेर ने उस औरत से कहा–'मुझे छोड़ दो। मैं जंगल में जाऊँगा।' औरत ने कहा–'मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी। तूने मेरे पति को क्यों मारा ?मैं अब तुझसे खेत जुतवाऊँगी।'

फिर वह औरत उस शेर को खेत में ले गई। उससे पूरा खेत जुतवाया। इसके बाद उस औरत ने शेर को छोड़ा नहीं। वह उससे खेती के और घर के काम करवाने लगी।

चरतु, फूल समूह, फरिया

खिड़की

जंगल में बारिश

मैं जब छोटा था, एक बार माँ ने कुकुरमुत्ते बटोरने के वास्ते मुझे जंगल में भेजा। मैंने जंगल में बहुत सारे कुकुरमुत्ते बटोरे और घर लौटने को हुआ। एकाएक अँधेरा छा गया, बादल गरजने लगे और वर्षा होने लगी। मैं डर गया और बड़े से बलूत के पेड़ के नीचे बैठ गया। तभी इतने जोर से बिजली चमकी कि आँखें दुखने लगीं और मैंने उन्हें मींच लिया। मेरे सिर के ऊपर कुछ तड़कने और कड़कने की आवाज हुई और फिर कोई चीज आकर जोर से मेरे सिर से टकरायी। मैं जमीन पर गिर पड़ा और तब तक वहाँ पड़ा रहा, जब तक वर्षा बंद न हो गई। जब मुझे होश आया, सारे जंगल में पेड़ों से पानी टपक रहा था, चिड़ियाँ गा रही थी और धूप निकल आयी थी। मेरे चारों और बलूत की खपचियाँ बिखरी पड़ी थीं। मेरी सारी कमीज गीली हो गई थी और शरीर से चिपकी हुई थी। सिर पर गुमटा निकल आया था और थोड़ा सा दर्द हो रहा था। मैंने अपनी टोपी और कुकुरमुत्तों की टोकरी उठायी और भागा–भागा घर पहुँचा। घर में कोई नहीं था। मैंने मेज से रोटी का टुकड़ा उठाकर खाया और अँगीठी के ऊपर जाकर सो गया। जब जागा तो देखा कि मेरे लाये कुकुरमुत्ते पका लिये गए हैं, मेज पर रखे हुए हैं और सब खाने बैठ गए हैं। मैं चिल्लाया, 'मेरे बिना क्यों खा रहे हो ?'उन्होंने जवाब दिया, 'तो सो क्यों रहे हो ?आओ, तुम भी खाओ।'

लेव तोलस्तोय

हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

कविता

मोर डूंगरी की पगडण्डी
जंगल में पौन लगै ठण्डी

कहानी

पहले चील खूब दिखाई देती थी। रास्ते और सड़कों के किनारे। मैंदानों में और पहाड़ों पर। फिर न जाने क्या हुआ कि वे दिखाई देना बंद हो गई। अब वे केवल अखबारों के चित्रों में ही दिखाई दे रही थीं। शायद वे रूठ गई थीं ?मगर क्यों ?और रूठकर कहाँ चली गई थीं कि दिखाई ही नहीं देती थीं। क्या वे एक दिन फिर दिखाई देने लगेंगी रास्तों और सड़कों के किनारे ?ऐसा धरती के निवासी सोच रहे थे।

जुलाई अंक में दी गई कविता की पंक्तियों को दो बच्चों ने आगे बढ़ाया है। प्रस्तुत है उनकी बढ़ायी कविताएँ–

म्हारी मींडकड़ी प्यासी मरगी रै

म्हारी मींडकड़ी नै पाणी पिला
बादल अबकै बेगौ–बेगौ बरस्यौ को

म्हारी मींडकड़ी प्यासी मरगी रै
अब तो मुं बी प्यासौ मरगौ रै।
म्हारी मींडकड़ी ...

अठी बी बरस्यौ, ऊठी बी बरस्यौ
हमारै घर बरस्यौ कोनी रै
म्हारी मींडकड़ी ...

अंकित, उम्र 10 वर्ष, रेनबो समूह

रंगी–बिरंगी मींडकड़ी

म्हारी मींडकड़ी नै पाणी पिला
बादल अबकै बेगौ–बेगौ बरस्यौ को

म्हारी मींडकड़ी रात–दिन सोवै को
म्हारी मींडकड़ी की पुकार सुण ली
म्हारी मींडकड़ी ...

बादल अबकै बेगौ बरसज्यौ रै
रंगी–बिरंगी मींडकड़ी दो–चार लाज्यौ रै।
म्हारी मींडकड़ी ...

विनोद, समूह–सूरज, बोदल

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1 खाती जावै, काडती जावै।
2 चार भाई मिलना चाहे, पर मिलै कोनी।
3 दो दरवाजा, जिमें दादाजी पछाड़ा खाता जावै।
4 एक जानवर ऐसा, जो पूँछ से पानी पिये।
5 जयपुर से आई रीछड़ी, छह पग एक पूँछड़ी।
6 हाथ में मटकी, चला गया चटकी,
सगा बलम से नटगी
7 काली गाय बन में बिया आई
बच्चे छोड़ घर को आई।
8 दो ढाय के नीचे दो कैड़ा बैठी।
9 मँगायी बीड़ी ले आयौ बंडल।
10 सात कबूतर सात रंग का
दड़ा में घुसते ही एक रंग का।

ये पहेलियाँ सूरज समूह, बोदल के बच्चों ने भेजी हैं। इनके जवाब पता करो।

बाल मंदिर पाठशाला से महक के भेजे दो चुटकुले –

•

राम भरोसे ने श्याम भरोसे से पूछा–'तुम्हारी शादी हो गई ?'
रामभरोसे ने कहा– 'हां हो गई।'
श्याम भरासे–'किससे ?'
राम भरासे–'लड़की से।'
श्याम भरोसे–'अच्छा ?मेरी बहन की तो लड़के से हुई है।'

•

कटोरी लाल गुस्से से चिल्लाया–'मैं तुझको मिटाकर रख दूंगा।'
सटोरी लाल आराम से बोला–'मैं तुझे रबर ही नहीं दूंगा।'

आग की खोज

आग के बारे में कहते हैं कि हमारे पूर्वजों ने हजारों लाखों वर्ष पूर्व चकमक पत्थरों को आपस में रगड़ कर आग की खोज की थी। चकमक पत्थरों को टकराया तो आग निकली। इस आग को घास–फूस में लगाकर फिर लकड़ी में लगाकर इसे बड़ा कर लिया। राख और मिट्टी में दबाकर सुरक्षित कर लिया। फिर जब भी जरूरत पड़ती इस दबी हुई आग में कूड़ा कर्कट डालकर इसे ज्यादा बना लेते। आग जलाकर जंगली जानवरों से अपनी रक्षा करते। तुमने सर्कस में देखा होगा कि सर्कस का कलाकार हंटर की आवाज करता है और शेरों को आग में से कूदने पर मजबूर करता है। शेर अपनी मर्जी से आग में नहीं कूदते। वे तो आग से डरते हैं। पर मरते क्या न करते, बेचारे हंटर की मार की डर से आग में से कूद पड़ते हैं। तो आदि–मानव ने आग जलाकर जंगली जानवरों से अपनी सुरक्षा की। धीरे–धीरे वे आग में पका कर मांस खाने लगे होंगे। आज तो हम आलू, टिण्डे, टमाटर सब कुछ आग में पकाकर खाते हैं। मछलियों को आग के चूल्हे पर छौंककर और मूँगफलियों को उसमें भूनकर खाते हैं।

क्या चकमक पत्थर में टकराहट पैदा कर चिंगारी निकालने से पहले आदि–मानव के पास आग नहीं रही होगी ?हम देखते–सुनते हैं कि कई बार जंगल में आग लग जाती है। और यह आग किसी के लगाए बिना भी लग जाती है। अब जंगल खुद तो चकमक पत्थरों को टकरा कर आग पैदा करके खुद में लगाता नहीं होगा ?फिर कहाँ से आती होगी यह आग और कैसे जंगल में धू–धूकर जल उठती होगी और दावालन बन जाती होगी ?

असल में जंगल में पेड़ बहुत पास–पास होते हैं। कई बार बाँस आदि के पेड़ों में एक दूसरे से रगड़ के कारण घर्षण से उष्मा उत्पन्न होती है। जिससे उनमें आग उत्पन्न हो जाती है और यह आग पूरे जंगल में फैल जाती है। तो जैसे जंगल में आज भी अपने आप आग लग जाती है हजारों लाखों वर्षों पहले भी इसी तरह लगती रही होगी। चकमक पत्थर से आग जलाना सीखने से पहले भी मानव आग के बारे में जानता होगा तथा भुना हुआ मांस भी खाता होगा। भुने खरगोश, तीतर, सूअर अगैहरा–वगैहरा।

दुर्गा प्रसाद,शिक्षक,जगनपुरा

वाह रे ! प्यारे रमेश

वाह रे ! प्यारे रमेश,
तेरे दो बकरे एक भैंस।
भैंस का दूध मीठा,
जैसे शक्कर और चींटा।
वाह रे ! प्यारे रमेश,
तेरे दो बकरे एक भेड़।
भेड़ की ऊन अच्छी,
जैसे धूप की हो लच्छी।
वाह रे ! प्यारे रमेश
तेरे लड़के का नाम सुरेश।

रणवीर गुर्जर, समूह–बादल

हलवाई का कमरा

बंदर एक दिन लगा खोलने
हलवाई का कमरा,
कमरे के अंदर से निकला
एक बड़ा सा भँवरा।

भँवरा लेकर उड़ा जलेबी
आसमान में झप से,
इतने में आया हलवाई
पूँछ पकड़ ली टप से।

ठीक जलेबी सा बंदर को
उसने घुमा दिया था,
कमरा क्यों खोला बंदर
बिन बोले बता दिया था।

वेणी प्रसाद शर्मा, शिक्षक,बोदल

बरसात का समय

बरसात आ रही है,
बरसात के साथ आँधी भी
चल रही है।
आँधी में कुँए ढह गए हैं,
पेड़ पौधे गिर रहे हैं,
खेत डूब गए हैं,
आदमी भाग रहे हैं,
जानवर गिर रहे हैं।
छान बैठ गई है,
दूकान बैठ गई है,
मकान गिर गए हैं,
मकान डूब रहे हैं,
पशु–पक्षी मर गए हैं।
बरसात जोर देने लगी,
बरसात में ओले आने लगे,
आदमी ओलों में रह गए हैं,
उनके खून निकलने लगा,
हाड बाहर निकल आया,
दस दिन हो गए बरसात नहीं रुकी,
बरसात का समय है।

आरती मीणा, उम्र–12 वर्ष, झील–समूह

फरिया

मैं भी साथ चलूँगा पापा

लिपट पैर के कहता,
मैं भी साथ चलूँगा पापा।
नहीं माँगूँगा खिलौने बिस्किट
नहीं करूँगा कभी भी जिद।

लिपट पैर के कहता,
मैं भी साथ चलूँगा पापा।
कहते–कहते रोने लगता,
एक उम्मीद से तकते रहता,
लिपट पैर के कहता,
मैं भी साथ चलूँगा पापा।

देख उसका मासूम चेहरा
मेरी आँखें भर आईं
सच है उसका रोना
माँग रहा बचपन का प्यार
क्यों छोड़ चला जाता हूँ उसको
रोता हुआ हर बार
उसको क्या लेना–देना
कहाँ जाता हूँ क्यों जाता हूँ
लिपट पैर के कहता
मैं भी साथ चलूँगा पापा।

देने उसको झूठी दिलासा,
बैठ गया घुटनों के बल,
नजरें चुराकर कहने लगा,
बेटा जल्दी आ जाऊँगा कल।
झूठ बोल रहे हो पापा,
कहकर गले से लिपट गया,
समझा नहीं सका मैं जब,
गुस्से में झिड़क दिया,
उठा बैग हाथ में झट से,
घर से बाहर निकल गया,
उठा वह, दौड़ा पागलों सा रोता,
करने लगा मुझसे टाटा,
हाथ हिलाता कहता रहा,
मैं भी साथ चलूँगा पापा !

कमलेश, शिक्षक,जगनपुरा

बात लै चीत लै

दादाजी का दस्ताना

एक थे बूढ़े दादाजी। जंगल से होकर कहीं जा रहे थे। पीछे–पीछे उनका कुत्ता भाग रहा था। चलते–चलते दादाजी के हाथ का दस्ताना गिर गया। इस बीच कहीं से एक चुहिया दौड़ती आई और दादाजी के दस्ताने में छिपकर बैठ गई और जरा दम लेकर बोली–'अब मैं यहीं रहूँगी।'
इसी वक्त एक मेंढ़क फुदकता हुआ वहाँ आ पहुँचा। उसने आवाज दी–
'दस्ताने में कौन रहता है ?'
'अरे मैं हूँ चुनमुन चुहिया लेकिन तुम कौन हो ?'
'मैं फुदकू मेंढ़क हूँ। मुझे भी अंदर आ जाने दो!'
'ठीक है, अंदर आ जाओ!'

इस तरह एक से दो हो गए। अचानक भागता हुआ एक खरगोश वहाँ आ पहुँचा और दस्ताने के करीब आकर उसने आवाज दी–'दस्ताने में कौन रहता है ?'
'अरे हम हैं–'चुनमुन चुहिया,फुदकू मेंढ़क। लेकिन तुम कौन हो ?'
'मैं उड़न–छू खरगोश हूँ ?मुझे भी अंदर आ जाने दो!'
'ठीक है,अंदर आ जाओ।'
अब वे तीन हो गए। ठीक इसी वक्त दौड़ती–दौड़ती एक लोमड़ी वहाँ आ पहुँची। दस्ताने के पास आकर उसने आवाज दी–
'दस्ताने में कौन रहता है ?'
'अरे हम हैं–चुनमुन चुहिया,फुदकू मेंढ़क और उड़न–छू खरगोश। लेकिन तुम कौन हो ?'
'मैं हूँ चटक–मटक लोमड़ी। मुझे भी अंदर आ जाने दो।'
'ठीक है! अंदर आ जाओ।'
इस तरह एक–एक कर वे चार हो गए।
इसी समय दौड़ता हुआ एक भेड़िया वहाँ आ पहुँचा। दस्ताने के पास आकर उसने आवाज दी–
'दस्ताने में कौन रहता है ?'
'अरे हम हैं–'चुनमुन चुहिया,फुदकू मेंढ़क, उड़न–छू खरगोश और चटक–मटक लोमड़ी! लेकिन तुम कौन हो ?'
'मैं हूं भुक्खड़ भेड़िया। मुझे अंदर आ जाने दो!'

'ठीक है। अंदर आ जाओ!'

अब वे पाँच हो गए। इसी तरह कहीं से भटकता हुआ जंगली सूअर वहाँ आ गया और दस्ताने के पास आकर उसने गुर्राते हुए आवाज दी–'दस्ताने में कौन रहता है ?'
'अरे हम हैं–'चुनमुन चुहिया,फुदकू मेंढ़क, उड़न–छू खरगोश और चटक–मटक लोमड़ी और भुक्खड़ भेड़िया! लेकिन तुम कौन हो ?'
'मैं हूं झगडू शूकर। मुझे अंदर आ जाने दो!'
क्या मुसीबत है! सभी दस्ताने में रहना चाहते हैं!
'देखो अब तुम्हारे लिए जगह नहीं है ! वैसे भी यहां अब दम घुटा जा रहा है!'
'देख लो किसी न किसी तरह जगह निकल आएगी। बस, जरा सी जगह दे दो!'
'अच्छा तो आ जाओ। अब किया ही क्या जा सकता है!'
जंगली सूअर भी अंदर पहुँच गया। दस्ताने में पूरे छह जानवर जमा हो गए। हिलना–डुलना तक मुश्किल हो रहा था!
और तो और कहीं से झूमता हुआ एक भालू भी आ पहुँचा और वहाँ पहुँचते ही जोर से गुर्राया, फिर उसने दहाड़ते हुए आवाज दी–
'दस्ताने में कौन रहता है ?'
'अरे हम हैं–'चुनमुन चुहिया,फुदकू मेंढ़क, उड़न–छू खरगोश और चटक–मटक लोमड़ी, भुक्खड़ भेड़िया और झगडू शूकर! लेकिन तुम कौन हो ?'
'अंदर भीड़ तो बहुत है! पर मेरे भर की जगह निकल आएगी! मैं हूँ खौफनाक भालू।'
'तुम्हें कैसे अंदर आने दें ?अंदर तो वैसे ही दम घुटा जा रहा है।'
किसी भी तरह आने दो!'
'अच्छा बस एक सिरे पर टिक जाओ!'
यह भी अंदर पहुँच गया। दस्ताने के अंदर सात–आठ जानवर समा गए। टस से मस होने भर की जगह न रह गई। लगा कि दस्ताना अब फटा अब फटा।

उधर दादाजी को ख्याल आया कि उनके हाथ का दस्ताना कहीं गिर गया है। वह उसे ढूँढने के लिए वापस लौटे। कुत्ता उनके आगे–आगे भागा। वह दौड़ता गया, वह दौड़ता गया और आखिर उसे दस्ताना पड़ा दिखाई दिया,पर यह क्या ?दस्ताना तो हिल–डुल रहा है! कुत्ता अब भौंकने लगा।

दस्ताने में घुसे हुए सारे जानवर डर गए। अपनी जान बचाने के लिए वे दस्ताने से निकलकर जंगल की ओर सिर पर पाँव रखकर भागे। तभी दादाजी ने वहाँ पहुँच कर दस्ताना उठा लिया।

(तो यह थी एक साभार प्रस्तुत उक्राईनी लोककथा। कैसी लगी ? पत्र लिखकर बताना। दुनिया के नक्शे में उक्रेन कहां है ?देखना। अपनी शिक्षिका से पूछना। और यह कि क्यों न तुम इस कहानी पर चित्र बनाकर मोरंगे को भेजो।)

प्यारे बच्चो,

आपकी ओर से कोई पत्र नहीं मिला। इसलिए 'तेरी मेरी, मेरी तेरी' बात का पन्ना इस बार भी उनके बिना रहा जा रहा है।

जयपुर से मोरंगे के एक पाठक कमल जी ने सुझाव दिया कि रचनाओं का फांट साइज बढ़ाना चाहिए। हमने उनके सुझाव पर अमल करते हुए फांट साइज 16 की जगह 18 कर दिया है। उनका कहना था कि इससे बच्चों को पढ़ने में आसानी रहेगी।

सूरज समूह के बच्चों ने कविता आगे बढ़ाकर दी थी लेकिन उनकी रचनाओं का बंडल शाला में ही कहीं गुम हो जाने की वजह से उनकी रचनाएं छपने से रह गई। उनके रचना भेजने के उत्साह को देखकर बहुत खुशी हुई है।

पिछली बार बोदल से एक लोककथा भेजी गई थी हमने उसे खुशी–खुशी शामिल किया। लेकिन इस अंक के लिए चारों शालाओं में से कहीं से भी कोई लोककथा नहीं आयी। अतः इस बार बात लै चीत लै स्तम्भ में हमने एक उक्राईनी लोककथा 'दादाजी का दस्ताना' दी है।

मोरंगे की सुदूर एक पाठिका ने प्रूफ की गलतियों की ओर ध्यान दिलाया और इस काम में मदद करने के लिए रुचि दिखायी। मोरंगे टीम उनकी आभारी है। जल्दी ही हम छपने से पहले एक नजर देख लेने के लिए उनके पास अंक जरूर भेजेंगे और उनकी मदद पाकर कृतज्ञ महसूस करेंगे।

मोरंगे के लिए रचनाएं और पत्र आप अपने समूह–शिक्षक को दे सकते हैं। और मोरंगे टीम के सदस्यों को सीधे भी दे सकते हैं। जगनपुरा में कमलेश जी को, बोदल में भारती जी को, फरिया में दिनेश जी को और सवाईमाधोपुर में मीनू जी को।

आपकी रचनाओं और सुझावों व सलाह–मशवीरे भरे पत्रों की इंतजार में।

मोरंगे